अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2020) दिनांक : दिनांक : 17-12-2020

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दण्डक–30

प्र. 1 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) तिर्यंच की अवगाहना

(ख) लेश्या द्वार–चौथी नरक से लेकर अंत तक लिखें।

(ग) स्थिति द्वार–देवों की स्थिति लिखें।

(घ) गति आगति द्वार–प्रारंभ से लेकर असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय तक लिखें।

(ङ) स्थिति द्वार–तिर्यंच की स्थिति द्वीन्द्रिय से लेकर अंत तक लिखें।

(च) उत्पत्ति द्वार तथा संज्ञा द्वार लिखें।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) वेद द्वार

(ख) दृष्टि द्वार

(ग) संहनन द्वार

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अवधिज्ञान व मनःपर्यवज्ञान का अंतर लिखें।

(ख) श्रुत निश्रित मतिज्ञान के प्रकारों के बारे में लिखते हुए केवल मल्लक दृष्टांत लिखें।

(ग) सम्पूर्ण आकाश के अंनत प्रदेश से प्रारंभ करते हुए अंगप्रविष्ट श्रुत तक लिखें।

(घ) अनानुगमिक व अप्रतिपाति अवधिज्ञान का वर्णन करें।

(ङ) अवधि ज्ञान के द्वारा देखने की शक्ति का यंत्र बनायें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) वर्धमान अवधिज्ञान जघन्यतः कितने क्षेत्र को जानता देखता है?

(ख) मनःपर्यव ज्ञान का स्वामी अप्रमत्त होता है, इसका तात्पर्य लिखें।

(ग) परम्पर सिद्ध केवलज्ञान के प्रकार लिखें?

(घ) हेतु उपदेश संज्ञा के अधिकारी में कौन-कौन से जीव आते हैं?

(ङ) औत्पत्तिकी बुद्धि किसे कहते हैं?

(च) द्रव्य की दृष्टि से सब रूपी द्रव्यों को कौन सा अवधिज्ञानी नहीं जानता व देखता है?

(छ) प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेदों के नाम लिखें।

(ज) मति ज्ञान शब्द के स्थान पर किस शब्द का प्रयोग भी होता है?

गीतिका (गुणस्थान दिग्दर्शन)–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) चार घाति कर्मों का क्षयोपशम निष्पन्न भाव किस गुणस्थान तक होता है?

(ख) क्षपक श्रेणी वालों के वेद क्षीण होने का क्या क्रम है?

(ग) किन-किन कर्मों का बंध दसवें गुणस्थान तक होता है?

प्र. 6 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) ज्ञानावरणी.....थायो रे।

(ख) संपराय.....पेखो रे।

(ग) मोह खायक.....माणे रे।

(घ) देश मोह.....मांही रे।

पूर्व कंठस्थ-ज्ञान–30

प्र. 7 सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य रूप से दें– 30

(क) पच्चीस बोल–आश्रव तत्व का चौथा भेद ***अथवा*** अंक 33 का भांगा। 1

(ख) चतुर्भंगी–ग्यारहवां ***अथवा*** अठारहवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–सत्रहवां बोल ***अथवा*** अंतिम छह भेद जीव के। 3

(घ) तत्व चर्चा–नौ तत्व पर सावद्य निरवद्य ***अथवा*** छह द्रव्यों पर छह में नौ की चर्चा। 3

(ङ) प्रतिक्रमण–अभ्युत्थान सूत्र ***अथवा*** आलोचना सूत्र। 2

(च) कर्म प्रकृति–वेदनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति ***अथवा*** अंतिम 10 पिंड प्रकृतियों के नाम लिखते हुए 13वीं पिंड प्रकृति की व्याख्या करें। 4

(छ) जैन तत्व प्रवेश–(प्रथम खण्ड)–मोहनीय व अंतराय कर्म के क्षयोपशम से होने वाली अवस्थाएं लिखें। ***अथवा*** आश्रव तथा संवर के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, गुण लिखें। 3

(ज) बावन बोल–उदय के तैतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने? ***अथवा*** जीव पारिणामिक के दस भेद छह द्रव्य में कौन? नौ तत्व में कौन? 3

(झ) इक्कीस द्वार–तेजोलेश्यी ***अथवा*** अज्ञानी। 4

(ञ) जैन तत्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड)–नय के दो प्रकार से लेकर अंत तक लिखें ***अथवा*** देवता व नारक में इन्द्रिय, पर्याप्ति, प्राण व शरीर कितने व कौन-कौन से पाते हैं? 4